ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-11 सितम्बर-I, 2016 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

स्वर्णिम दुनिया का रहस्योद्घाटन

तालकटोरा स्टेडियम में सुनते हुए हज़ारों लोग। मंच पर बायें से ब्र.कु. शुक्ला, सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के प्रवक्ता ब्र.कु. बृजमोहन एवं ब्रह्माकुमारीज़ की अति. मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी।

दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तालकटोरा स्टेडियम में 'सुखमय भविष्य के लिए महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन' कार्यक्रम में 'निकट भविष्य में विश्व के महापरिवर्तन के पश्चात् स्वर्णिम भारत किसके लिए आयेगा और वहाँ कौन महान लोग होंगे' का रहस्योद्घाटन करते हुए कार्यक्रम की अध्यक्षा एवं ब्रह्माकुमारीज़ की अति. मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि स्वर्णिम दुनिया का अर्थ ही है, जहाँ सारी सामग्री में ही सतोप्रधानता होगी, और वहाँ रहने वाले मनुष्य में भी सत्य की ही प्रधानता होगी। दादी ने आगे कहा कि वर्तमान में परमात्मा द्वारा सिखाये गये राजयोग से आत्मा की सतोप्रधानता की अवस्था क्या है, उसके बारे में बताया जा रहा है। उन शिक्षाओं को धारण करने वाले ही सतयुग में आने के हकदार होंगे। वहाँ प्रकृति और मनुष्य दोनों में सत्य की पराकाष्ठा होगी। उसके लिए हमें स्वयं को जानना, और स्वयं की वास्तविकता को पहचानना, उसमें निहित दिव्य गुणों को समझना होगा। साथ साथ अपने व्यवहार में भी क्रियान्वयन कर सद्संस्कारों का सिंचन करना होगा। दादी जी ने कहा कि अब वो समय दूर नहीं जहाँ सारी सृष्टि पर शांति और सत्यता का ही साम्राज्य होगा। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य वक्ता ब्र.कु. बृजमोहन ने वर्तमान समय को महापरिवर्तन का समय बताते हुए कहा कि दुनिया की हर चीज़ पहले शुरु होती है अथवा नई होती है। फिर धीरे-धीरे पुरानी होती है और हर चीज़ के पुरानी होने की एक सीमा होती है। इसी तरह यह सृष्टि भी चार युगों से गुज़रते हुए फिर से सतयुग में आती है। उन्होंने कलयुग और सतयुग में अंतर स्पष्ट करते हुए बताया कि कलयुग में किसी भी व्यक्ति के साथ कभी भी कुछ भी हो सकता है जबकि सतयुग में हर चीज़ ठीक स्थान पर मर्यादा से होती है।

जहाँ मनुष्य और प्रकृति दोनों अपनी पराकाष्ठा पर होंगे, जहाँ दिव्य गुण सबके अंदर स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होंगे, जहाँ फूल, पत्ते, पौधे और पंछियों के सुरीले कंठ और उनसे उत्पन्न मधुर संगीत मनभावक होंगे, नदी का कलरव सुनकर मन प्रफुल्लित हो उठेगा, ऐसे सुखमय, स्वर्णिम संसार का आगमन निकट है। समय बहुत कम है, कम समय में पुरुषार्थ से उस स्वर्णिम दुनिया के लायक बनना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं कार्यक्रम की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने विषयांतर्गत बताया कि देवी-देवताओं ने अपनी कर्मेन्द्रियों से पवित्र रहते कर्म किये हैं इसलिए उनके हर कर्मेन्द्री की कमल से तुलना की जाती है। अब परमात्मा राजयोग सिखाकर वैसी ही सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं जहाँ दैवी गुण वाले ही मनुष्य होंगे।

संचार माध्यमों का ध्येय समाज सेवा हो : करुणा

पुणे। आज परिवर्तन के दौर में जहाँ बदलाव आ रहे हैं वहाँ संचार माध्यमों का ध्येय और धर्म समाज सेवा ही होना चाहिए। यह विचार पुणे में जिला स्तरीय मीडिया सम्मेलन 'संचार माध्यमों में बदलते आयाम तथा मूल्यों की पुनर्स्थापना' विषय के वैचारिक मंथन में सार रूप में निकलकर आया।

प्रमुख वक्ता के रूप में सोसायटी ऑफ मीडिया इनिशिएटिव फॉर वैल्यूज़, भोपाल के प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि परिवर्तन के इस दौर में व्यावसायिक स्पर्धा और शाश्वत मूल्यों की धारणाओं में हो रहा असंतुलन, खुद को स्थापित करने के लिए प्रसार माध्यमों की मूल्यों से बढ़ती दूरी, इन बातों से माध्यमों में मूल्यों का क्षरण होता दिखाई दे रहा है। विधायक प्रो. मेघा कुलकर्णी ने कहा कि मीडिया को सत्य परख करके प्रसारण और प्रकाशन करना चाहिए। पत्रकार सुधीर गाडगीळ ने मीडिया मालिकों के लिए ऐसे सम्मेलन की आवश्यकता बताई।

सम्बोधित करते हुए मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा। मंचासीन हैं ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. उर्मिला, प्रो. कमल दीक्षित, डॉ. संजय भानावत।

मल्हार अराणकल्ले, संपादक, दैनिक सकाल, पुणे ने कहा कि बदलाव प्राकृतिक नियम है। हर क्षेत्र में बदलाव हो रहा है, तो इस क्षेत्र में भी बदलाव होना चाहिए। प्रो. डॉ. संजीव भानावत, प्रमुख, जनसंचार विभाग, राज. विश्व-विद्यालय, जयपुर ने मीडिया में चल रहे सोशल मीडिया के प्रयोग तथा उससे निर्माण हो रहे सामाजिक मनोगत व्यक्त किये।

ब्र.कु. करुणा, अध्यक्ष, मीडिया प्रभाग, माउण्ट आबू ने मीडिया प्रतिनिधियों से माध्यम दूत के साथ शांतिदूत भी बनने का आह्वान किया तथा बताया कि मानवीय मूल्यों का संवर्धन हो तथा संचार माध्यमों का समाज सेवा के हित में उपयोग हो।

साथ ही सम्मेलन में मीडिया प्रभाग के मुख्यालय समन्वयक ब्र.कु. शांतनु, जलगांव से डॉ. सोमनाथ वडनेरे, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. निलीमा, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. पारू, ब्र.कु. विधा तथा शहर के एवं पुणे जिला के सैकड़ों पत्रकार भी उपस्थित थे।